Sankat Mochan Hanuman Ashtak

Tulsidas (16th century) · rashikundli.com

बाल समय रवि भक्षी लियो तब,
तीनहुं लोक भयो अँधियारो
ताहि सों त्रास भयो जग को,
यह संकट काहु सों जात न टारो
देवन आनि करी बिनती तब,
छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो
बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो
चौंकि महामुनि साप दियो तब,
चाहिए कौन बिचार बिचारो
कैद्विज रूप लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के सोक निवारो
को नहिं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो
अंगद के संग लेन गए सिय,
खोज कपीस यह बैन उचारो
जीवत ना बचिहौ हम सो जु,
बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो
हेरी थके तट सिन्धु सबै तब,

लाए सिया-सुधि प्राण उबारो

को नहिं जानत है जग में कपि

संकटमोचन नाम तिहारो

रावण त्रास दई सिय को सब,

राक्षसी सों कही सोक निवारो

ताहि समय हनुमान महाप्रभु,

जाय महा रजनीचर मारो

चाहत सीय असोक सों आगि सु,

दै प्रभुमुद्रिका सोक निवारो

को नहिं जानत है जग में कपि

संकटमोचन नाम तिहारो

बान लग्यो उर लछिमन के तब,

प्राण तजे सुत रावन मारो

लै गृह बैद्य सुषेन समेत,

तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो

आनि सजीवन हाथ दई तब,

लछिमन के तुम प्रान उबारो

को नहिं जानत है जग में कपि

संकटमोचन नाम तिहारो

रावन जुध अजान कियो तब,

नाग कि फाँस सबै सिर डारो

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल,

मोह भयो यह संकट भारो

आनि खगेस तबै हनुमान जु,

बंधन काटि सुत्रास निवारो

को नहिं जानत है जग में कपि

संकटमोचन नाम तिहारो

बंधु समेत जबै अहिरावन,

लै रघुनाथ पताल सिधारो

देबिहिं पूजि भलि विधि सों बलि,

देउ सबै मिलि मन्त्र विचारो

जाय सहाय भयो तब ही,

अहिरावन सैन्य समेत संहारो

को नहिं जानत है जग में कपि

संकटमोचन नाम तिहारो

काज किये बड़ देवन के तुम,

बीर महाप्रभु देखि बिचारो

कौन सो संकट मोर गरीब को,

जो तुमसे नहिं जात है टारो

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,

जो कछु संकट होय हमारो

को नहिं जानत है जग में कपि

संकटमोचन नाम तिहारो

लाल देह लाली लसे,

अरु धरि लाल लंगूर

वज्र देह दानव दलन,

जय जय जय कपि सूर

Where this text comes from: BhaktiBharat
Written and reviewed by the RashiKundli Editorial Team · rashikundli.com